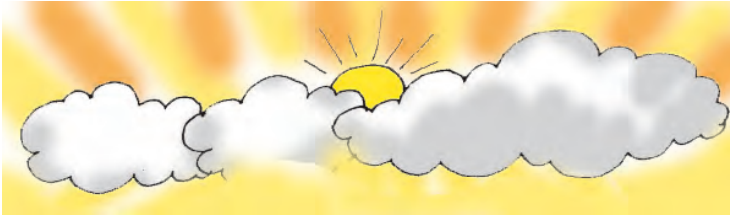
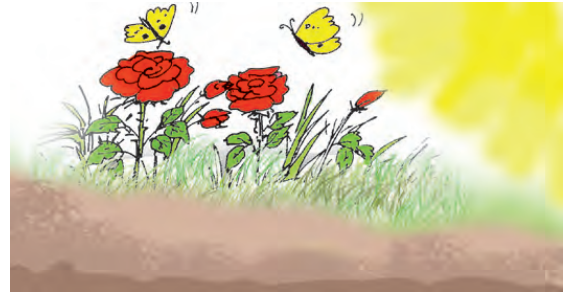


- सुनो, समझो और गाओ :

२. पथ मेरा आलोकित कर दो



पथ मेरा आलोकित कर दो ।
नवल प्रात की नवल रश्मि से
मेरे उर का तम हर दो ॥



मैं नन्हा-सा पथिक विश्व के
पथ पर चलना सीख रहा हूँ,
मैं नन्हा-सा विहग विश्व के
नभ में उड़ना सीख रहा हूँ ।

पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक
मुझको ऐसे पग दो, पर दो ॥



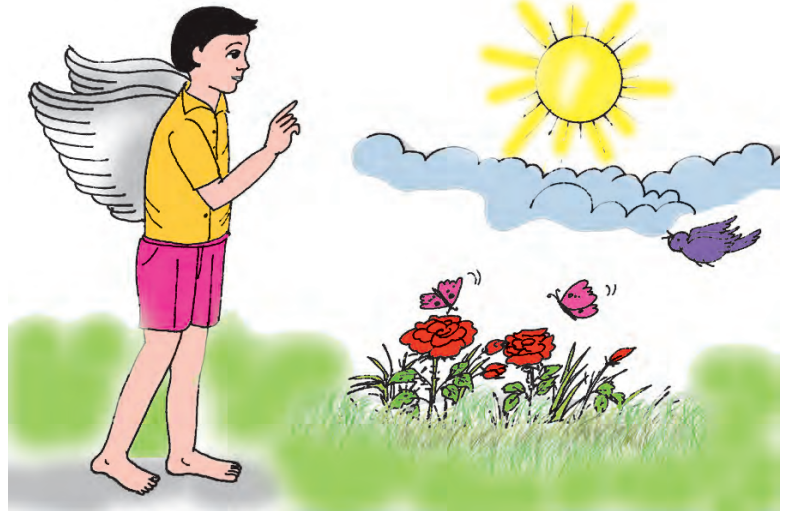
- उचित हाव-भाव, अभिनय के साथ कविता का सस्वर पाठ करें । विद्यार्थियों से कविता का अनुकरण पाठ कराएँ । उनसे कविता में समाहित भावों पर चर्चा करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में एवं एकल रूप से कविता का साभिनय, सस्वर पाठ कराएँ ।

पंख बहुत नन्हे हैं मेरे
ऊँचा अधिक न उड़ पाता हूँ,
लक्ष्य दूर तक उड़ पाने का
प्राप्त नहीं मैं कर पाता हूँ ।



शक्ति मिले तो उड़ पाऊँ मैं
मेरे हित कुछ ऐसा कर दो ॥

पाया जग से जितना अब तक
और अभी जितना मैं पाऊँ,
मनोकामना है यह मेरी
उससे कहीं अधिक दे पाऊँ ।



धरती को ही स्वर्ग बनाऊँ
मुझको यह मंगलमय वर दो ॥

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

□ विद्यार्थियों से कविता में तुकांत शब्द ढूँढ़ने के लिए कहें। कविता में आए अनुनासिक (ँ) शब्दों का वाचन कराएँ। विश्व, पग, पंख, धरती आदि शब्दों के समानार्थी शब्द बताने के लिए प्रेरित करें। कविता में आए नए शब्दों का वाचन एवं लेखन कराएँ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक पाठ के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ। यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं। विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वकष मूल्यापन' भी करते रहें।